बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र के सुधार : स्थिति एवं संभावनाएं*

या.वे.रेड्डी

इस पैनल चर्चा में भाग लेने के लिए मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं आयोजकों का आभारी हूँ।

मेरी सिफारिशें तीन भागों में विभाजित हैं - वैयक्तिक, बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र के सुधारों की वर्तमान स्थिति तथा भावी संभावनाएं।

वैयक्तिक स्तर पर मैंने यहाँ उपस्थित सभी विशिष्ट पैनलिस्टों के साथ बड़ी घनिष्ठता के साथ काम किया है अतः मैं सार्वजनिक रूप में उनके आभार का ऋण स्वीकार करना चाहूंगा।

मैं डॉ. मनमोहन सिंह हमारे प्रधान मंत्री के साथ विभिन्न हैसियतों में काम करता रहा हूँ। वित्त मंत्रालय में 1977 में उप वित्त सचिव से लेकर तथा अधिक घनिष्ठता के साथ सुधारों के प्रारंभ होने के बाद से। मैं बहुत संक्षेप में यह कहना चाहूँगा कि मैं हमेशा उनकी दूर-दर्शिता और मार्गदर्शन से प्रेरित होता रहा हूँ। मैं उनका आभारी हूँ कि उन्होंने मुझ में अपना विश्वास बनाए रखा है।

मैं मोन्टेक को लगभग 25 वर्षों से जानता हूँ और सुधारों की अवधि के दौरान मैंने उनके साथ कुछ समय के लिए घनिष्ठता के साथ कार्य किया है। उनकी तेज बुद्धिमत्ता और प्रशंसनीय रूप से स्पष्ट विचारों के लिए कोई भी उनसे अनिवार्य रूप से प्रभावित होगा। हम परस्पर दोस्त रहे हैं और एक दूसरे की व्यावसायिक योग्यताओं के लिए एक दूसरे का सम्मान करते हैं।

डॉ. सी. रंगराजन मेरे गुरू हैं - एक सच्ची भारतीय परंपरा के गुरू हैं। उन्होंने मुझे उससे भी ज्यादा अर्थशास्त्री बना दिया है जिसका कि मैं कभी सपना भी नहीं देख सकता था। मौद्रिक राजकोषीय, वित्तीय तथा बाह्य क्षेत्र में अद्वितीय और प्रभावशाली सुधारों के लिए संकल्पनागत ढांचा तथा बौद्धिक और संस्थागत नींव उनके द्वारा डाली गई।

उनके उत्तराधिकारी डॉ. जालान ने इस ढांचे को परिशोधित किया और सूक्ष्म अर्थ भेद के साथ उसका रूपांतरण किया, न केवल इन सुधारों को आगे बढ़ाने के लिए, बल्कि स्थिरता के लिए चुनौतियों का प्रबंधन करने के लिए भी।डॉ. जालान का विनिमय दर प्रबंधन में योगदान स्वीकार्य रूप से स्मरणीय है।

मैंने श्री चिदंबरम के साथ प्रारंभ में जब वे वाणिज्य मंत्री थे तब काम किया था और बाद में जब वे केंद्रीय वित्त मंत्री थे। हम निरंतर घनिष्ठता के साथ काम करते रहे हैं और यह पूर्णतः जानते हुए कि उनके साथ चर्चा करने का परिणाम बेहतर नीति के रूप में होगा, उनके साथ चर्चा करना आनंद का विषय रहता है।

श्री चिदंबरम एक निर्भीक निर्णय लेने वाले और प्रभावी रहे हैं। इन गुणों के ज्वलंत उदाहरण हैं - स्वर्ण के उदारीकरण तथा अर्थोपाय अग्रिमों को शुरू करने के संबंध में उनके निर्णय, जो कि मुद्रा, सरकारी प्रतिभूति तथा विदेशी बाजारों के विकास के लिए महत्वपूर्ण पूर्वापेक्षाएं थीं।

मुझे याद है कि जब तीन साल पहले मैंने गवर्नर के रूप में ज्वाइन किया था तो मैंने नीति के निरंतरता के साथ परिवर्तन के पहलुओं पर जोर दिया था। यह भारतीय सुधारों की निश्चित विशिष्टता है जिसे सतर्कता के रूप में वर्णित किया गया है। श्री वाजपेयी, तत्कालीन प्रधान मंत्री, श्री जसवंत सिंह, तत्कालीन वित्त मंत्री ने इस दृष्टिकोण का समर्थन किया था। श्री सिंह ने रणनीतिगत मार्गदर्शन प्रदान किया और उन्होंने मेरी व्यावसायिक दक्षताओं और निर्णय पर पूरा विश्वास किया।

वास्तव में, मेरा विश्वास है कि सुधारों के पंद्रह वर्षों में, हमारे सभी नेताओं ने अपनी विविध पृष्ठभूमि के साथ तथा अपनी भिन्न-भिन्न गुणवत्ताओं के साथ भारत में आर्थिक नीति के विकास में योगदान किया है, जिसने आज हमें गर्व प्रदान किया है और भविष्य के लिए महान आशाएं प्रदान की हैं।

बैंकिंग क्षेत्र की वर्तमान स्थिति के बारे में, स्वीकार्य रूप से काफी सुधार किए जाने की गुंजाईश है तो भी वृद्धि और स्थिरता को सुनिश्चित करने में इसकी शक्ति और ऊजर्स्विता को सारे विश्व में स्वीकार किया गया है। प्रमुख उभरती अर्थव्यवस्थाओं में हम सेवा क्षेत्र की तुलना अपने अनुकूल रूप में करते हैं और विनिर्माण क्षेत्र में प्रतिस्पर्धी होने का प्रयास कर रहे हैं, जबकि राजकोषीय और बुनियादी सुविधाओं के मोर्चों पर काबू पाने का प्रयास कर रहे हैं। तथापि यह वित्तीय और बैंकिंग क्षेत्र ही हैं जिनमें हम अकाट्य रूप से आगे हैं।

---

* डॉ. या.वे.रेड्डी, गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा 6 अक्तूबर 2006 को नेशनल सेंटर फॉर पर्फोमिंग आर्टस, मुंबई में ''दि इकानामिक टाइम्स अवार्ड फॉर कारपोरेट एक्सीलेंस 2006-07" के अवसर पर 'सुधारों के 15 वर्ष तथा भावी पथ' विषय पर पैनल चर्चा में की गई टिप्पणियाँ।

हमारे बैंकिंग क्षेत्र का सुधार विश्व में अनुपम रहा है क्योंकि इसमें प्रतिस्पर्धा, विनियमन और स्वामित्व संयोग का व्यापक पुन अभिर्मुखीकरण निर्विघ्न तथा मितव्ययी रूप में हुआ है। वस्तुतः हमारा बैंकिंग क्षेत्र का सुधार काफी समय से बनी हुई समस्याओं के प्रबंधन में सार्वजनिक क्षेत्र की गतिशीलता तथा घरेलू और विदेशी वित्तीय क्षेत्रों के प्रतिस्पर्धी बनने और अपना विस्तार करने में समर्थ बनाने में सार्वजनिक नीति की व्यवहारिकता का एक अच्छा उदाहरण है।

इसी प्रकार भारत का संपूर्ण वित्तीय क्षेत्र ज्वलंतता और ऊर्जस्विता दर्शाता है। सरकारी प्रतिभूति, मुद्रा और विदेशी मुद्रा बाजारों के क्रमिक रूप से खुलती हुई उभरती बाजार अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण सार्वजनिक नीति के निहितार्थ हैं। ये सुधारों की अवधि के दौरान विकसित हुए हैं जिसमें सहभागियों और लिखतों का प्रभावकारी विशाखीकरण रहा है।

भारतीय वित्तीय क्षेत्र के संस्थागत, तकनीकी और व्यष्टि संरचनागत पहलू विश्व के सर्वोत्तम स्तरों से तुलनीय हैं। यहाँ, पुनः वित्तीय क्षेत्र में प्राप्त की गई प्रगति सरकार, मौद्रिक प्राधिकरण, विनियामकों और सबसे बढ़कर विविध बाजार प्रतिभागियों - घरेलू और विदेशी, सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्र दोनों के बीच परस्पर सहयोग के माध्यम से स्वस्थ विकास का प्रमाण है।

बैंकिंग में भावी संभावनाओं को दर्शाते हुए ग्रामीण सहकारी ऋण प्रणाली में सुधारों पर जोर देते हुए तत्काल ध्यान अल्प पूंजी वाले बैंकों की कमियों को दूर करने पर केंद्रित होता है। उनके संचालन और वित्तीय प्रबंधन में सुधार को सुनिश्चित करना भी जरूरी है। समग्र बैंकिंग प्रणाली में एक स्वस्थ ऋण संस्कृति जिसमें उपयुक्त मूल्य निर्धारण, सेवाओं की गुणवत्ता, वित्तीय समावेशन सहित संविदा प्रवर्तन महत्वपूर्ण होगा।

जहाँ बड़ी कंपनियों ने अनेक स्रोतों जैसे बैंकों, गैर-बैंकों, पूंजी बाजारों और बाह्य स्रोतों से निधियों को प्राप्त करने में पर्याप्त आजादी पहले ही प्राप्त कर ली है, वहीं छोटे और मझौले उद्यम, कृषि क्षेत्र, शिल्पकारों तथा अनौपचारिक क्षेत्र का समग्रतः काफी सीमा तक लाभान्वित होना बाकी रह जाता है।

आगे के लिए संपूर्ण वित्तीय क्षेत्र के लिए, सुदृढ़ बुनियादी आधारों और बुनियादी संस्थागत ढांचे को देखते हुए वास्तविक और राजकोषीय क्षेत्रों में सुधारों की प्रगति के अनुरूप और आगे अपविनियमन और उदारीकरण की गति से संबंधित मुद्दे हैं। व्यवहार में, दिए हुए कानूनी सांचे के अंदर विकसित होती हुई घरेलू और बाह्य गतिविधियों के अनुरूप अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए प्राथमिकताएं बनानी होंगी।

भारतीय रिज़र्व बैंक का हमारे देश की सेवा में, एक प्रमाणित अच्छा रिकार्ड और व्यावसायिकता रही है, जिसने इसे देश के अंदर और वैश्विक स्तर पर उल्लेखनीय विश्वसनीयता और श्रेय प्रदान किया है। यह विश्वसनीयता रिज़र्व बैंक को विश्वसनीय रूप से कीमतों का तथा वित्तीय स्थिरता को बनाए रखने के लिए सुधारों को आगे बढ़ाने का विश्वास प्रदान करती है, साथ ही उन्नत स्तरों पर स्वतःस्फूर्त सम्यक वृद्धि को लाने में समर्थ बनाती है।